1 पतरस

पतरस प्रेरित द्वारा लिखा गया पहला पत्र

1 पतरस की तरफ़ से जो यीशु मसीह
का प्रेरित है उन परदेशियों के नाम जो
पुन्तुस, गलातिया, कप्पदुकिया, एशिया और
बिथुनिया में परदेशी हैं। 2 परमेश्वर पिता
तुम्हें बहुत पहले ही से जानते थे और उन्होंने
दूसरे लोगों से तुम को अलग किया है।
इसलिये तुमने उनकी बात मानी और यीशु
मसीह के खून से तुम शुद्ध किये जा चुके हो।
परमेश्वर की ढेर सी कृपा और शान्ति तुम्हें
मिले।

3 हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और
पिता का धन्यवाद हो, जिन्होंने यीशु मसीह
के मरे हुओं में से जी उठने के द्वारा अपनी
बड़ी दया से हमें जीवित आशा में नया
जन्म दिया है। 4 अर्थात् एक न मिटने वाली
और अमर विरासत के लिए जो तुम्हारे लिए
स्वर्ग में रखी है। 5 जो परमेश्वर की ताकत[a]
से विश्वास के द्वारा उस मुक्ति के लिए
सुरक्षित रखे गए हैं, जो आने वाले समय में
प्रगट होने वाली है। 6 इस वजह से तुम मगन
होते हो हालांकि ज़रूर है कि तुम इस समय
तरह-तरह की परीक्षाओं[b] की वजह से उदास
हो। 7 यह इसलिए कि तुम्हारा परखा हुआ
विश्वास जो आग से तपाए हुए बर्बाद न
होने वाले सोने से भी कहीं ज़्यादा कीमती है,
यीशु मसीह के लौटने पर बड़ाई, इज़्ज़त और
महिमा का कारण ठहरे। 8 तुम बिना यीशु को
देखे उन से मोहब्बत रखते हो और बिना देखे
विश्वास करके ऐसे खुश और मगन होते
हो, जो बयान से बाहर और महिमा से भरा
हुआ है। 9 और तुम्हारे विश्वास का नतीजा
तुम्हारा उद्धार है।

10 इसी मुक्ति या उद्धार के बारे में
उन भविष्यद्वक्ताओं ने होशियारी से जाँच
पड़ताल की थी। 11 उन्होंने इस बात की
खोज की, कि मसीह का आत्मा जो उन में
था और पहले ही से मसीह के दुखों की और
उसके बाद आने वाली महिमा की गवाही
देता था, वह कौन से और कैसे समय की
ओर इशारा करता था। 12 भविष्यद्वक्ताओं
पर यह प्रगट किया गया था कि वे अपनी
नहीं, लेकिन तुम्हारी सेवा के लिए ये बातें
कहा करते थे ।उन बातों की खबर अब
तुम्हें उन से मिली है जिन्होंने स्वर्ग से भेजे
हुए पवित्र आत्मा की मदद से तुम्हें खुशी
की खबर सुनायी। इन बातों को स्वर्गदूत भी
ध्यान से देखने की इच्छा रखते रहे हैं।

13 इस वजह से अपने मन को काम करने
के लिए तैयार रखते हुए, सचेत होकर यीशु
मसीह के लौटने के समय मिलने वाली कृपा
की पूरी आशा रखो। 14 आज्ञा मानने वाले
बच्चों की तरह अपनी नासमझी के समय की
पुरानी चाह मत रखो, 15 लेकिन जैसे तुम्हारे
बुलाने वाले पवित्र[c] हैं वैसे ही तुम भी अपने
सारे चालचलन में बनते जाओ। 16 लिखा है
कि' पवित्र[d] बनो, क्योंकि मैं पवित्र हूँ।'

17 इसलिए कि तुम हे पिताजी कह कर उन
से प्रार्थना करते हो जो बिना तरफ़दारी किए
हर एक के काम को देख कर इन्साफ़ करते
हैं, अपने परदेशी होने के समय को परमेश्वर

---

[a] **1.5** सामर्थ [b] **1.6** परेशानियों [c] **1.15** सब से भिन्न [d] **1.16** यीशु की तरह

के डर में बिताओ। 18 क्योंकि तुम जानते हो
कि तुम्हारा निकम्मा चालचलन जो पूर्वजों
से चला आ रहा है उससे तुम्हारी आज़ादी
चाँदी, सोने या बर्बाद होने वाली चीजों से नहीं
हुयी। 19 लेकिन निर्दोष और निष्कलंक मेम्ने
अर्थात् मसीह के खून से हुयी। 20 उनका[a]
ज्ञान तो दुनिया को बनाए जाने से पहले ही
से जाना गया था, लेकिन अब इस आखिरी
ज़माने में तुम्हारे लिए सामने लाया गया।
21 जो उनके द्वारा उस परमेश्वर पर भरोसा
करते हो, जिन्होंने यीशु को मरे हुओं में
से जिलाया और इज़्ज़त दी, ताकि तुम्हारा
भरोसा और उम्मीद परमेश्वर पर हो।
22 सत्य को अपना लेने से तुमने अपनी
आत्मा को पवित्र[b] कर लिया है, ताकि
आपस में एक दूसरे से सच्चा प्रेम कर
सको। अपने पूरे मन से दूसरों से प्रेम रखो।
23 क्योंकि तुमने बर्बाद हो जाने वाले नहीं
लेकिन बर्बाद न होने वाले बीज से परमेश्वर
के ज़िन्दा और हमेशा ठहरने वाले शब्द से
नया जन्म पाया है। 24 क्योंकि हर एक इन्सान
घास की तरह है और उसकी सारी खूबसूरती
घास के फूल की तरह है। घास सूख जाती है
और फूल झड़ जाता है,
25 लेकिन प्रभु की कही हुई बातें सदा तक
रहेंगी और यह वही खुशी का संदेश है, जो
तुम्हें सुनाया गया था।

2 इसलिए हर तरह की दुश्मनी, चालाकी,
कपट, डाह और बदनामी को दूर रखते
हुए, 2 नए जन्में हुए बच्चों की तरह निर्मल
आत्मिक दूध की चाह रखो ताकि उससे
मुक्ति[c] में बढ़ते जाओ। 3 क्योंकि तुमने
सचमुच यीशु की कृपा का स्वाद चख लिया
है।
4 तुम यीशु के पास आए हो,जो परमेश्वर
के भवन के जीवित, कोने के पत्थर[d] हैं,लोगों
ने उन्हें तुच्छ समझा था, लेकिन उन्हें बड़े
आदर के लिये चुना गया था। 5 तुम भी खुद
जीवित पत्थरों की तरह आत्मिक घर बनते
जाते हो जिस से पुरोहितों का पवित्र झुंड
बन कर ऐसी आत्मिक भेंटें लाओ जो यीशु
मसीह के नाम से परमेश्वर को कबूल हो
सकें। 6 इसीलिए बाइबल में भी लिखा हैः
देखो, मैं सिय्योन में नींव का चुना हुआ और
कीमती पत्थर धरता हूँ और जो कोई उस पर
विश्वास लाएगा, वह किसी तरह से शर्मिन्दा
नहीं होगा।
7 इसलिए तुम विश्वास करने वालों के
लिए वह कीमती हैं, लेकिन जो लोग आज्ञा
नहीं मानते, उनके लिए जिस पत्थर को
राजमिस्रियों ने बेकार साबित किया वह नींव
का पत्थर हो गया है। 8 ऐसे लोग सच्चाई को
कबूल न करने की वजह से ठोकर खाते ही
नहीं, लेकिन ठोकर खाने के लिए ठहराए भी
गए थे।
9 लेकिन तुम एक चुना हुआ वंश, शाही
पुरोहित, पवित्र राष्ट्र और परमेश्वर के लोग
हो, इसलिए जिस ने तुम्हें अँधेरे में से अपनी
अनोखी रोशनी में नेवता दिया है, उनकी
अच्छाइयाँ दिखलाओ। 10 पहले तुम उनके
लोग नहीं थे लेकिन अब परमेश्वर की प्रजा
हो, तुम पर दया नहीं हुयी थी, लेकिन अब
हुयी है।
11 हे प्रियो मैं तुम से निवेदन करता हूँ कि
तुम अपने आपको परदेशी और मुसाफ़िर
समझ कर उन दुनियावी अभिलाषाओं से जो
आत्मा से युद्ध करती हैं, बचे रहो। 12 दूसरे
लोगों के बीच तुम्हारा चालचलन अच्छा हो,
इसलिए कि जिन बातों में वे तुम्हें बुरा समझ

[a] **1.20** परमेश्वर का [b] **1.22** शुद्ध [c] **2.2** यीशु की समानता [d] **2.4** मुख्य

कर बदनाम करते हैं, तुम्हारे भले कामों की
वजह से कृपादृष्टि के दिन परमेश्वर की
बड़ाई करें।
13 यीशु की खातिर नागरिकों के लिए बनाए
गए हर इन्तज़ाम[a] के अधीन रहो। राजा
के अधीन इसलिए, कि वह सब के ऊपर
शासन करता है। 14 अधिकारियों के अधीन
इसलिए क्योंकि वे गलत करने वालों को
सज़ा देने और सही करने वालों को सम्मानित
करने के लिए परमेश्वर द्वारा ठहराए गए हैं।
15 परमेश्वर की इच्छा यह है कि तुम भले
काम करने से बेअकल लोगों की अज्ञानता
की हरकतों को बन्द कर दो। 16 अपने
आपको आज़ाद जानो, लेकिन अपनी इस
आज़ादी को बुराई के लिए, आड़ न बनाओ
और अपने आपको परमेश्वर के सेवक,
समझ कर रहो। 17 सब की इज़्ज़त करो, भाई
बहनों से प्यार रखो, परमेश्वर से डरो और
राजा को सम्मान दो।
18 हे सेवकों, पूरे आदर के साथ अपने
स्वामियों के अधीन रहो, न सिर्फ़ भले और
नम्र लोगों के, लेकिन निर्दयी लोगों के भी।
19 अगर कोई परमेश्वर का ध्यान रखते हुए
बेइन्साफ़ी की वजह से दुख उठाता है, तो
यह बड़ी प्रशंसा की बात है। 20 क्योंकि अगर
तुमने अपराध करके घूँसे खाए और धीरज
धरा तो इस में कौन सी बड़ी बात? लेकिन
यदि भला काम करके दुख उठाते हो और
धीरज धरते हो, तो इस से परमेश्वर को
खुशी होती है। 21 तुम ऐसे जीवन के लिए ही
बुलाए भी गए हो, क्योंकि मसीह भी तुम्हारे
लिए दुख उठा कर तुम्हारे सामने एक नमूना
छोड़ गए हैं कि तुम उनकी तरह बनो। 22 यीशु
ने न कोई गुनाह किया और न ही उनके मुँह से
छल की कोई बात निकली। 23 उन्होंने गाली
सुन कर गाली नहीं दी और दुख उठा कर
किसी को भी धमकी नहीं दी। उन्होंने बिना
तरफ़दारी के इन्साफ़ करने वाले परमेश्वर
के हाथों में सब कुछ सुपुर्द कर दिया। 24 वह
खुद ही हमारे गुनाहों को अपनी देह पर लिए
क्रूस पर चढ़ गए, जिस से हम उन गुनाहों[b] से
किनारा करके अच्छे कामों के लिए जिएँ।
उनके घायल किए जाने की वजह से तुम
स्वस्थ हो चुके हो[c]। 25 पहले तुम भटकी हुई
भेड़ों की तरह थे, लेकिन अब अपने प्राणों
के चरवाहे और देख-रेख करने वाले के पास
वापस आ चुके हो।

3 हे पत्नियो, इसी तरह तुम भी अपने
पति के अधिकार को स्वीकार करो,
उनके भी जो परमेश्वर को मानने के लिए
तैयार नहीं हैं। 2 तुम्हारे बिना कुछ कहे
सिर्फ़ तुम्हारे चालचलन ही से वे यीशु को
मानने वाले हो जाएँगे। 3 बाहरी खूबसूरती के
बारे में ज़्यादा मत सोचो जो तरह-तरह के
बालों की स्टाइल महँगे जेवरात और सुन्दर
कपड़ों से आती है। 4 शान्त स्वभाव की एक
भीतरी खूबसूरती है जो परमेश्वर की निगाह
में बहुत कीमती है, वही तुम्हारी पहचान
होनी चाहिए। 5 पुराने समयों में परमेश्वर
से प्यार करने वाली महिलाएँ इसी तरह से
अपने आपको संवारती थीं। वे परमेश्वर
पर भरोसा रखती और पति की अधीनता में
रहा करती थीं। 6 उदाहरण के लिए साराह,
अब्राहम को 'मेरे मालिक' कह कर बुलाया
करती थी। अगर तुम उसी की तरह वही करो
जो ठीक है और किसी बात से भयभीत न हो
तो उसी की बेटियाँ ठहरोगी।
7 इसी तरह से तुम पतियो, अपनी पत्नियों
की इज़्ज़त करो। उसके साथ समझदारी के
साथ पेश आओ। वह कमज़ोर हो सकती है,

[a] **2.13** कानून [b] **2.24** अनुचित बातों [c] **2.24** या माफ़ी मिल चुकी है या परमेश्वर के साथ सम्बन्ध हो चुका है

लेकिन तुम दोनों परमेश्वर के नए जीवन के
वरदान में बराबरी के साथी हो। ऐसा करने से
तुम्हारी प्रार्थनाओं के उत्तर में रुकावट नहीं
आएगी।
8 निचोड़ की बात यह है कि तुम सभी को
एक मन, सहानुभूति और प्यार से भरा, दयालु
और नम्र होना चाहिए। 9 बुराई के बदले बुराई
और बेइज़्ज़ती के बदले बेइज़्ज़ती न करो,
लेकिन आशीर्वाद दो क्योंकि ऐसी ही तुम्हारी
बुलाहट है और तभी तुम आशीष पाओगे।
10 क्योंकि जो अपनी भलाई की सोचता है
और अच्छे दिन देखना चाहता है, उसे चाहिए
कि वह अपनी जीभ को बुराई और होठों को
झूठ से बचाए। 11 उसे दुष्टता से मुड़ कर भला
करना चाहिए। उसे दूसरों के साथ मेल से
रहना चाहिए। 12 इसलिए कि यीशु मसीह की
आँखें माफ़ किए हुए लोगों और उनके कान
उनकी दुआओं की तरफ़ लगे रहते हैं। बुरा
करने वाले लोगों से वह अपना मुँह मोड़ लेते
हैं।
13 अगर तुम सही और भला करने का मन
बना चुके हो तो कौन तुम्हारा कुछ बिगाड़
सकता है। 14 लेकिन सच तो यह है कि अगर
तुम जायज़ काम करने पर तकलीफ़ उठाते
हो तो तुम्हें इसका फल मिलेगा। इसलिए न
ही घबराओ और न चिन्तित हो। 15 बजाए
इसके यीशु को अपने जीवन का मालिक
समझ कर उपासना करो। अगर कोई तुम
से तुम्हारी उम्मीद के बारे में पूछे तो उसे
समझाने के लिए हमेशा तैयार रहो। 16 लेकिन
यह भी इज़्ज़त, दीनता और शुद्ध विवेक के
साथ करना, ताकि जो लोग तुम्हारे मसीही
चालचलन की खिलाफ़त करते हैं, तुम पर
आरोप लगाते समय शर्मिन्दगी महसूस करें।
17 यदि परमेश्वर को यह मन्ज़ूर है तो
हम सही काम करें और तकलीफ़ उठाएँ
बजाए इसके कि गलत करने की सज़ा
पाएँ। 18 क्योंकि बेगुनाह यीशु मसीह ने भी
गुनाहों के लिए एक बार दुख उठाया। ताकि
परमेश्वर के खिलाफ़ बलवा करने वालों के
साथ परमेश्वर का मेल हो सके। उन्होंने देह
में तो मौत सह ली, परन्तु पवित्र आत्मा से
जिलाए गए। 19 तभी उन्होंने जाकर न्यायिक
हिरासत में बंद आत्माओं को खुशी की खबर
सुनायी। 20 नूह के जहाज़ बनाए जाने के समय
परमेश्वर इन्हीं अनाज्ञाकारियों का इन्तज़ार
करते रहे थे, कि वे अपना मन बदलें। लेकिन
ऐसा नहीं हुआ और जल प्रलय के बाद
केवल आठ ही लोग बच पाए 21 यह बप्तिस्मे
की तरफ़ इशारा है जो खुद मुक्ति पाने को
दिखाता है - यह देह की गंदगी साफ़ नहीं
करता है लेकिन यह परमेश्वर के आगे शुद्ध
विवेक की अपील है। यीशु मसीह के मरे
हुओं में से जी उठने की वजह से 22 जो स्वर्ग
पहुँचकर परमेश्वर के साथ सारे अधिकार
के साथ विराजमान हैं स्वर्गदूत, प्रधानताएँ
एवं ताकतें उनके अधीन हैं।

4 इसलिए जब कि मसीह ने देह में होकर
दुख उठाया, तो तुम भी इसी रवैये[a] को
हथियार की तरह ले लो। इसलिए कि जिस
ने देह में दुख उठाया है, वह गुनाह से आज़ाद
हो गया है। 2 इसलिए इस देह में अपनी
बाकी ज़िन्दगी मनुष्यों की अभिलाषाओं में
नहीं, लेकिन परमेश्वरीय इच्छा के अनुसार
बिताओ। 3 क्योंकि दुनियावी लोगों की शैली
- जैसे कामुकता, पियक्कड़पन, रंगरेलियाँ,
मद्यपान गोष्ठियाँ तथा घृणित मूर्तिपूजा में जो
तुमने समय गँवाया, वही बहुत हुआ। 4 इन
सब बातों में उनको आश्चर्य होता है कि तुम

[a] **4.1** मन

ऐसे भारी बुरे कामों में अब उनका साथ नहीं
देते हो, इसलिए वे तुम्हारी निन्दा करते हैं।
5 लेकिन यीशु जो जीवित और मरे हुओं का
न्याय करेंगे, उन्हीं यीशु के सामने उन लोगों
को अपनी करनी का हिसाब देना पड़ेगा।
6 क्योंकि मर चुके लोगों को भी खुशी की
खबर इसलिए सुनायी गयी ताकि देह में तो
उनका न्याय मनुष्यों के अनुसार हो, लेकिन
आत्मा में वे परमेश्वर के मुताबिक जिएँ।
7 सब कुछ जल्दी[a] खत्म होने वाला है
इसलिए समझदार होकर प्रार्थना में लगे रहो।
8 प्रेम अनगिनित गुनाहों को ढाँप देता है,
इसलिए एक दूसरे से प्रेम रखना सब से
बड़ी बात होगी। 9 एक दूसरे की आवभगत
बिना कुड़कुड़ाए करो 10 जिस को जो वरदान
मिला है, वह उसे परमेश्वर की तरह-तरह
की कृपा के भले भण्डारियों के समान एक
दूसरे की सेवा में लगाए। 11 जिस को सिखाने
का काम मिला है वह ऐसा बोले जैसे कि
परमेश्वर ही उसके माध्यम से बोल रहे हैं।
यदि तुम्हें दूसरों की मदद करने की योग्यता
मिली है, तो परमेश्वर से प्राप्त सारी शक्ति से
ऐसा करो। तब यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर
को हर बात में प्रशंसा और सम्मान मिलेगा।
सारी महिमा[b] और अधिकार उन्हीं का है।
ऐसा ही हो।
12 प्रियो, दुख रूपी आग-परीक्षा जिस में से
होकर तुम्हें जाना पड़ रहा है, उसके कारण
यह समझ कर आश्चर्यचकित न हो कि तुम्हारे
साथ कुछ अजीब बातें हो रही हैं। 13 इसके
बजाए, तुम्हें खुश होना चाहिए, क्योंकि इन
मुश्किल परिस्थितियों में से गुज़रने से तुम
मसीह के साथ उनके दुखों में हिस्सेदार
बनोगे। बाद में सारी दुनिया के सामने उनकी
अनोखी महिमा के प्रगट होने पर तुम्हें बड़ी
खुशी होगी। 14 यदि यीशु मसीह के कहलाए
जाने की वजह से तुम्हें शर्मिन्दा किया जाए,
तो खुश होना क्योंकि महिमा का आत्मा जो
परमेश्वर का आत्मा है तुम में रहता है।
15 किसी भी तरह से तुम में कोई खूनी, चोर,
दुष्टता का काम करने वाला और दूसरों के
कामों में दखल देने वाला होने की वजह
से दुख न उठाए। 16 लेकिन यदि कोई यीशु
मसीह का होने के कारण दुख उठाए, तो
शर्मिन्दा न हो, लेकिन अपने इस नाम के लिए
परमेश्वर की महिमा करे। 17 समय आने पर
परमेश्वर के घर से ही इन्साफ़[c] शुरू होगा
। लेकिन यदि ऐसा है,तो उन लोगों का क्या
होगा जिन्होंने परमेश्वर के सुसमाचार को
नहीं अपनाया? 18 यीशु के लोगों के लिए
उनके विश्वास के कारण इस दुनिया के
जीवन को खत्म करके भविष्य के जीवन में
दाखिल होने तक बहुत दुख हैं, तो मसीह
का इन्कार करने वाले भविष्य के जीवन के
दुख[d] को कैसे सह पाएँगे?
19 इसलिए वे भी जो परमेश्वर की
इच्छानुसार दुख उठाते हैं, सही चाल चलते
हुए अपने आपको विश्वासयोग्य सृजनहार
के सुपुर्द कर दें।

5 तुम्हारे यहाँ के बुज़ुर्ग अगुवों के समान
मैं भी मसीह की पीड़ाओं का गवाह रहा
हूँ, और आने वाली महिमा का भी हिस्सेदार
हूँ। मैं तुम्हारे अगुवों को दिलासा दिलाना
चाहता हूँ, 2 कि वहाँ के परमेश्वर के लोगों
की रखवाली करें। यह भी इसलिए नहीं कि
करना है या इस से कुछ आमदनी हो जाएगी
लेकिन परमेश्वर के मार्गदर्शन में खुशी से।
3 जिन लोगों की देख-रेख करनी है, उन पर
ज़ोर ज़बरदस्ती न करें, लेकिन सभी के लिए

[a] **4.7** अचानक [b] **4.11** शान [c] **4.17** पुरुस्कारों का दिया जाना [d] **4.18** न्याय

नमूना बनें। 4 जब प्रधान रखवाले का आना
होगा, तुम्हें इतना शानदार ताज दिया जाएगा,
जो कभी मुरझाता नहीं है।
5 इसी तरह से नवजवानो, तुम भी अपने
अगुवों की मानो। तुम सभी एक दूसरे के प्रति
दीनता और नम्रता का बर्ताव करो, इसलिए
कि “परमेश्वर घमण्डी का मुकाबला करते
हैं, लेकिन नम्र इन्सान के पक्ष में काम करते
हैं।”
6 इसलिए शक्तिशाली परमेश्वर की
अधीनता में नम्रता से जीना सीखो ताकि सही
समय पर वह तुम्हें बढ़ाएँ। 7 अपनी सारी
चिन्ताओं को उन्हीं पर डाल दो, क्योंकि
तुम्हारी देख-भाल वही करते हैं।
8 अपने आपको काबू में रखो और सचेत
रहो, क्योंकि तुम्हारा दुश्मन शैतान गर्जने
वाले शेर की तरह इस तलाश में रहता
है, कि किस को अपना निशाना बनाए।
9 अपने विश्वास में मज़बूत रह कर उसका
मुकाबला करो और यह जान लो कि तुम्हारे
भाई जो इस दुनिया में हैं, इसी तरह की पीड़ा
सह रहे हैं। 10 तुम्हारी थोड़ी देर के कष्ट सहने
के बाद सारी कृपा के परमेश्वर जिन्होंने
तुम्हें मसीह में अपनी युगानुयुग की महिमा के
लिए बुलाया है, खुद ही तुम्हें सिद्ध, मज़बूत,
बलवन्त और स्थिर कर देंगे। 11 उन्हें महिमा
और प्रभुता सदा मिलती रहे। ऐसा ही हो।
12 मैंने सिलवानुस के हाथ, जिसे मैं
विश्वसनीय भाई समझता हूँ, थोड़ा सा लिख
कर तुम्हें समझाया है और यह गवाही दी है
कि परमेश्वर की सच्ची कृपा यही है, इसी में
बने रहो।
13 वह जो तुम्हारे साथ चुनी गई है और
बेबिलोन[a] में है, और मेरा बेटा मरकुस तुम्हें
नमस्कार कहते हैं
14 प्रेम और आदर से एक दूसरे से मिलो।
तुम सभी को जो, यीशु को अपना चुके हो,
शान्ति मिले।

[a] **5.13** इराक

DUSTY SANDALS
All Rights Reserved. www.dustysandals.com